



A Multidisciplinary Indexed International Research Journal



ISSN : 2320-3714
Volume : VIII

airo
ADHYAYAN
INTERNATIONAL
RESEARCH
ORGANISATION



महिला सशक्तीकरण तथा मानव अधिकार

Dr. Krishna Kumar Thakur

Asst. Professor Hindi Century Cement College Baikunth (C.G.) Dist. Raipur

Declaration of Author: I hereby declare that the content of this research paper has been truly made by me including the title of the research paper/research article, and no serial sequence of any sentence has been copied through internet or any other source except references or some unavoidable essential or technical terms. In case of finding any patent or copy right content of any source or other author in my paper/article, I shall always be responsible for further clarification or any legal issues. For sole right content of different author or different source, which was unintentionally or intentionally used in this research paper shall immediately be removed from this journal and I shall be accountable for any further legal issues, and there will be no responsibility of Journal in any matter. If anyone has some issue related to the content of this research paper's copied or plagiarism content he/she may contact on my above mentioned email ID.

प्रस्तावना

स्त्री के स्व की पहचानया उसके अस्तित्वसे है। जब कोई व्यक्ति अपने समाजपरिवार और परिवेश में अपने हिसाब से जीना चाहता है और जी नहीं पाता हैतब वह परिवार और समाज में अपने अस्तित्व की तलाश करता है। जबकि देखा जाय तो परिवार और समाज में मनुष्य का अधिकांश व्यक्तित्व दूसरों द्वारा निर्धारित होता रहा है। परिवार में स्त्रीहो या पुरुषदोनों अपने अनुसार अपने व्यक्तित्व को बनाना या निखारना चाहते हैं। लेकिन धर्मतंत्र और सामाजिक अर्थव्यवस्था ने स्त्रियों को शिक्षा और संपत्ति के अधिकार तथा सामाजिक हैसियत से वंचित कर उसे विवाह और परिवार से इस तरह बांध दिया कि वह अपनी स्वतंत्रता का विसर्जन और आत्मसमर्पण करने की कीमत पर ही सम्मान की जिंदगी बिता सकती है। धर्म ने परिवार और विवाह कर नीतितत्वपतिव्रत और यौन-शुचिता की अनिवार्यता सुनिश्चित कर स्त्री की अस्मितास्वायत्तता और संबंधों की स्वाधीनता पर अंकुश लगा दिया। इस प्रकार

स्त्री को आज तक समाज और परिवार में बेटीबहूमाँ के रूप में ही पहचाना जाता रहा है। लेकिन आज की स्त्री इन तमाम बंधनों से निकलकर 'स्वतंत्र व्यक्तित्व' के रूप में अपनी पहचान कायम करना चाहती है। फिर यही से शुरू हो जाती है उनकी अपनी अस्मिता और अस्तित्व की तलाश।

आखिर स्त्री अस्मिता है क्यादरअसल यह पुरुष के समान स्त्री का समान अधिकारस्त्री के प्रति विवेकमूलक दृष्टिकोण तथा स्त्री द्वारा पुरुष के वर्चस्व का प्रतिरोध है। औरत का केवल स्वतन्त्र होकर निर्णय ले सकना या आर्थिक रूप से स्वतंत्र हो जाना ही उसकी अस्मिता नहीं है। सही मायने में स्त्री अस्मिता का अर्थ होगा स्त्री के प्रति समाज के दृष्टिकोण और मानसिकता में बदलाव जिसमें स्त्री का खुद का दृष्टिकोण भी शामिल हो।वर्तमान समय में स्त्री के सामने स्त्री-अस्मिता का प्रश्न सबसे बड़ा प्रश्न है। स्त्री-अस्मिता की लड़ाईस्त्री स्वाभिमान की लड़ाई है। भारतीय समाज में स्त्री अस्मिता का प्रश्न आधुनिक चेतना का

प्रतीक है। आधुनिक स्त्री को जब अपनी भारतीय परंपरा में अपना चेहरा दिखाई नहीं देता है तब वह अपनी परंपरा की तलाश करती हुई इतिहास में लौटती है और अपने को स्थापित कराना चाहती है। समाज में पुरुषवर्ग को यह समझना ही होगा कि स्त्री समानता की लड़ाई बुनियादी लड़ाई है। इससे उसे स्वतंत्रता, आत्मनिर्भरता एवं अस्मिता की पहचान मिलेगी। इस संघर्ष के प्रति तदर्थभावदयाभाव या सहानुभूतिभावस्त्री के संघर्ष एवं अवदान को कम करेगा। स्त्री की समानता के संघर्ष के प्रति दया या सहानुभूति की जरूरत नहीं है बल्कि यह महसूस करने की जरूरत है कि यह तो उसका अधिकार था जो उसे दिया जाना चाहिए।

साहित्यकार समाज की गतिविधियों का चित्रण विविध साहित्यिक विधाओं द्वारा समाज के सामने प्रस्तुत करते हैं। कविताकहानी उपन्यास आदि में समकालीन मानव जीवन के तमाम पहलुओं की तस्वीर हम देख सकते हैं। स्त्री सशक्तीकरण और मानव अधिकार को समकालीन साहित्य में एक प्रमुख मुद्दे के रूप में पेश किया जा रहा है। आजाद पूर्व के युग में भारतीय नारियों की दशा बहुत दयनीय और दर्दनाक थी। उन्हें परदे के पीछे रखा जाता था, शिक्षा वे था। नहीं अधिकार का लेने दीक्षा- जीव अपनेन का कोई भी निर्णय अपने आप नहीं ले सकती थी। विवाह के पूर्व पिताविवाह के बाद पति और वृद्धावस्था में पुत्र उसके जीवन

का निर्णय लेते थे। शादी के पूर्व और शादी के बाद ससुराल की चौहदियों के अन्दर अपना जीवन व्यतीत करने के लिए स्त्री अभिशप्त थी। लेकिन आजादी के बाद आधी आबादी समझी जाने वाली स्त्रियाँ हाशिए तोड़कर बाहर आने की कोशिश करने लगीं। वे अपने अधिकार के बारे में सचेत होने लगीं। फलस्वरूप उनकी हालत में भी सुधार हुआ। शिक्षा भी उनके जीवन में नया मोड देने में सहायक बनी। अब स्त्री का क्षेत्र घर के चहार दीवार नहीं हैं। सामाजिकराजनैतिक और आर्थिक दृष्टि से सृष्टता और सशक्तता की ओर बढ़ने वाली स्त्री आज भी मानव अधिकार के लिए लड़ रही है। अपने को जीवन के तमाम क्षेत्रों में पुरुषों के समान बनाना और अपनी स्थिति को सुदृढ या मजबूत बनाना ही सशक्तिकरण है। आज की स्त्री सामाजिकराजनैतिक और आर्थिक दृष्टि से सशक्त है। पर पुरुष वर्चस्ववादी समाज उसे इस तरह की स्वतंत्रता देने को तैयार नहीं हैं। पुरुष के समान स्वतंत्र होकर जीने से स्वावलम्बी होने से और स्वतंत्र होकर स्वयं निर्णय लेने का अधिकार प्राप्त करने से ही स्त्री सशक्त होती है। लेकिन आजकल ये तमाम अधिकारों के होने पर भी स्त्री स्वतंत्र नहीं हैं।

भारतीय संविधान ने भारत के हर नागरिकों को इंसान की तरह सम्मानपूर्वक जीने का शिकार प्रदान किया है। लेकिन आधी आबादी स्त्री और दलित इस अधिकार से वंचित हैं। दलित स्त्री

का जीवन दोहरा अभिशाप है। छीनी गयी जिन्दगी और छूटे हुए अधिकार ने स्त्री ने नयी ललक पैदा कर दी है। समान काम के लिए समान वेतन का अधिकार ट्रेड यूनियन बनाने और उसमें शामिल होने का अधिकार शिक्षा का अधिकार सांस्कृतिक कार्यकलापों में हिस्सेदारी का अधिकार जैसे मानव अधिकार हर नागरिक के समान नारी को भी मिलें हैं। लेकिन फिर भी इन सारे अधिकारों के होते हुए भी स्त्री इनसे वंचित नजर आ रही है। समकालीन स्त्री को अपने अधिकारों के बारे में सचेत बनाकर सशक्त कराने का श्रेय आज साहित्य ले रहा है।

हाशिए लाँघकर स्त्री को आगे बढ़ाने का आह्वान समकालीन साहित्यकर्मी कर रहे हैं। इसमें खास भूमिका महिला रचनाकारों की है। समकालीन हिन्दी कवि अनामिका कात्यायनी नीलेश रघुवंशीरेणु यादवनिर्मला पुतुलग्रेज कुजूरनीरा परमारमंजुश्री वात्स्यायन, सुशीला टाकभौरैस्नेहा ठाकुरविमल खंडेकररजतरानी मीनूसुनीता ठाकुरकौशल पवाररजनी तिलक आदि ने अपनी कविताओं द्वारा महिला सशक्तिकरण और मानव अधिकार के लिए आवाज उठाकर आज की हाशिएकृत जनता का कराने सचेत को (है शामिल भी स्त्री इसमें) दलित ने लेखिकाओं दलित है। किया प्रयास तलाश की मार्ग-मुक्ति से गुलामी की स्त्री हैं। लिखी कविताएँ वाली करने रमणिका गुप्ता के अनुसार आज स्त्री सजग है। वे कहती हैं -

आ में समझ की स्त्री तो व्याख्या साझी एक बनाने गुलाम को मन उसके ने पुरुष कि है गई परिवार उसे पहले सेब्याहसंतान और समाज की लक्ष्मण रेखाओं के बाड़े में कैद करके उसके शरीर को गुलाम बनाया और उसेसभी अधिकारों से वंचित किया।

महिला सशक्तिकरण और सामाजिक विद्यायन

किसी भी समाज की कल्पना बिना नारी के नहीं की जा सकती समाज का स्वरूप वहाँ की नारी की स्थिति पर निर्भर करता है न केवल हमारा देश अपितु सम्पूर्ण विश्व इस सत्य को नहीं नकार सकता और यदि कोई समाज या देश इस सत्य के साथ कोई भी छेड़छाड़ करता है तो उसका दुष्परिणाम उसे तुरन्त मिलने लगता है। नेपोलियन बोनापार्ट ने नारी की महत्ता को बताते हुए कहा था कि मुझे एक योग्य माता दो मैं तुमको एक योग्य राष्ट्र दूँगा। भारत में भी नारी के संदर्भ में युक्ति है कि तत्र रमन्ते पूज्यन्ते नार्यस्तु यत्र - देवताअतीत से ही नारी का समाज में महत्वपूर्ण स्थान रहा है। उसे सुख का समृद्धि- है रहा जाता माना प्रतीकयह स्थिति काफी समय तक चलती रही किन्तु समयानुसार स्वार्थवश नारी को मात्र भोग वस्तु की विलास-कार यही गया। लिया मानण था कि समाज में नारी की स्थिति दयनीय हो गयी। जीवन में नारी के महत्व को स्पष्ट करते हुए बताया है किजब आकाश बादलों से काला पड़ जाता हैजब

हम अंधकार में अकेले होते हैं प्रकाश की एक किरण भी नहीं दिखाई देती और चारों ओर सिर्फ कठिनाईयाँ ही कठिनाईयाँ होती हैं तब हम अपने आपको किसी प्रेममयी नारी के (माँ) हैं। जाते हो निश्चिंत और हैं देते छोड़ में हाथों शास्त्रों में भी नारी के संबंध में मिलता है कि-

या देवी सर्वभूतेषु मातृ रूपेण संस्थिता।

नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥

महिलाओं से संबंधित मुद्दे वैश्विक और सार्वभौमिक है। समता विकास और शांति पर आधारित समाज के लिए यह अति आवश्यक है कि महिलाओं का सर्वांगीण विकास और उनके अधिकारों को सम्मान मिले। विश्व स्तर पर महिला सशक्तिकरण से काल प्राचीन यद्यपि : कायम जगह अपने मत का विद्वानों तक आज उत् के स्त्रियों कि है रहाथान के बिना सामाजिक उत्थान सम्भव नहीं है। इसीलिए प्लेटो रिपब्लिक में स्त्री शिक्षा की अनिवार्यता को स्वीकार करते हैं। अरस्तूमिलमाक्रसग्रीन और गाँधी तक ने जब मानव जाति के उत्थान पर विचार किया है स्त्रियों की दशा एवं दिशा पर विचार किया है। इतिहास गवाह है कि वे समाज एवं सभ्यतायें विनाश के गर्त में समा गई जिनमें स्त्री को वस्तु के रूप में निरूपित किया गया। आज भी युद्धभूखमहामारीअशिक्षा एवं अस्वास्थ्यकर स्थित से जूझते विश्व के समक्ष स्त्रियों की दशा सुधारने का प्रश्न ज्वलंत है। स्त्रियों के अधिकारों एवं सम्मानजनक स्थिति

के निर्माण के लिए समस्त जनसेवी विश्व संस्थायें सक्रिय हैं। विश्व संगठन का प्रयास इसी प्रयास की एक कड़ी है।

वर्तमान समय में प्रत्येक क्षेत्र में महिलाएं पुरुषों के साथ कार्य कर रही हैं एवं सफल हो रही हैं। आज महिलाएँ डाक्टर हैंवकील हैंजज हैंइन्जीनियर हैंप्रोफेसर हैंआर्किटेक्ट हैंसफल राजनीतिज्ञ हैंवैज्ञानिक हैं। भारतीय नारी की ये सब उपलब्धियों सच हैं पर उतना ही सच हैं उनकी स्थिति का अन्धकारमय पक्ष। हमें इस सत्य को नहीं भूलना चाहिये कि ये सब उपलब्धियाँ शहरी महिलाओं एवं मध्यम या उच्च वर्ग की महिलाओं तक ही सीमित है। यदि आन्तरिक तौर पर देखा जाये तो आज भी ये प्रगतिशील कहीं जाने वाली महिलायें पूर्ण रूप से पतिपिताभाईपुत्र अर्थात् पुरुष वर्ग पर निर्भर हैं। अधिकांश स्त्रियाँ अपने कोई भी निर्णय पुरुष वर्ग की इच्छा के बिना नहीं ले सकती। निम्न वर्ग की महिलायें तो पूर्ण रूप से घर की आर्थिक समस्या एवं जिम्मेदारियाँ उठाने के बावजूद भी किसी तरह भी स्वतंत्र नहीं हैं। अपने निर्णय स्वयं नहीं ले सकती हैं। उसे बात-लांछन और है जाता किया प्रताडित पर बात है। पड़ता सहना

नई सदी में नारी

पश्चिमी जगत के पुरुष विरोधी रूप से उभरा नारी मुक्ति संघर्ष आज व्यापक मूल्यों के पक्षधर के रूप में अग्रसर हो रहा है। यह मानव

समाज के उज्ज्वल भविष्य का संकेत है। बीसवीं सदी का प्रथमार्ध यदि नारी जागृति का काल था तो उत्तरार्ध नारी प्रगति का। इक्कीसवीं सदी का यह महत्वपूर्ण पूर्वार्ध नारी सशक्तीकरण का काल है। आज सिर्फ पश्चिम में ही नहीं वरन विश्व के पिछड़े देशों में भी नारी घर से बाहर खुली हवा में सांस ले रही है एवं जीवन के हर क्षेत्र में पुरुषों से भी दो कदम आगे बढ़ चुकी है। अब वह शीघ्र ही अतीत के उस गौरवशाली पद पर पहुँच कर ही दम लेगी जहाँ नारी के मनुष्य में देवत्व व धरती पर स्वर्ग की सृजिका तथा सांस्कृतिक चेतना की संबाहिका होने के कारण समाज 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता' का मूल मन्त्र गुणगुणाने को बाध्य हुआ था। नारी की आत्म विस्मृतिदैन्यता व पराधीनता के कारणों में विभिन्न सामाजिक मान्यताएं व विशिष्ट परिस्थितियाँ रहीं हैं जो देश काल व समाज के अनुसार भिन्न भिन्न हैं। पश्चिम के दर्शन व संस्कृति में नारी सदैव पुरुषों से हीनशैतान की कृतिपृथ्वी पर प्रथम अपराधी थी। वह पुरोहित नहीं हो सकती थी। यहाँ तक कि वह मानवी भी है या नहीं, यह भी विवाद का विषय था। इसीलिये पश्चिम की नारी आत्म धिक्कार के रूप में एवं बदले की भावना से कभी फैशन के नाम पर निर्वस्त्र होती है तो कभी पुरुष की बराबरी के नाम पर अविवेकशील व अमर्यादित व्यवहार करती है। पश्चिम के विपरीत भारतीय संस्कृति व दर्शन में नारी का सदैव गौरवपूर्ण व पुरुष से श्रेष्ठतर स्थान रहा है। 'अर्धनारीश्वर'

की कल्पना अन्यत्र कहाँ है। भारतीय दर्शन में सृष्टि का मूल कारण अखंड मातृसत्ता अदिति भी नारी है। वेद माता गायत्री है। प्राचीन काल में स्त्री ऋषिका भी थी, पुरोहित भी। व गृह स्वामिनी अर्धांगिनी श्रीसमृद्धि आदि रूपों से सुशोभित थी। कोई भी पूजायग्य अनुष्ठान उसके बिना पूरा नहीं होता था। ऋग्वेद की ऋषिका केतुरहं अहं है कहती पोलोमी शची-ऋतुपतिरु ममेदनु। विवाचानी मूर्धाहमुग्रा ऋग्वेद उपाचरेत सेहनाया अर्थात् में-ध्वजारूप (स्वामिनी गृह)तीब्र बुद्धि वाली एवं प्रत्येक विषय पर परामर्श देने में समर्थ हूँ। मेरे कार्यों का मेरे पतिदेव सदा समर्थन करते हैं। हॉमध्ययुगीन अन्धकार के काल में बर्बर व असभ्य विदेशी आक्रान्ताओं की लम्बी पराधीनता से उत्पन्न विषम सामाजिक स्थिति के घुटन भरे माहौल के कारण भारतीय नारी की चेतना भी अज्ञानता के अन्धकार में खो गई थी। नई सदी में नारी को समाज की नियंता बनने के लिए किसी से अधिकार माँगने की आवश्यकता नहीं है वरन उसे अर्जित करने की है। आरक्षण की वैशाखियों पर अधिक दूर तक कौन जासका है। परिश्रम से अर्जित अधिकार ही स्थायी संपत्ति हो सकते हैं। परन्तु पुरुषों की बराबरी के नाम पर स्त्रियोचित गुणों व कर्तव्यों का बलिदान नहीं किया जाना चाहिए। ममता वात्सल्य उदारता धैर्य लज्जा आदि नारी सुलभ गुणों के कारण ही नारी पुरुष से श्रेष्ठ है। जहाँ 'कामायनी' का रचनाकार "नारी तुम केवल श्रद्धा हो" से नतमस्तक होता

है, वहीं वैदिक ऋषि घोषणा करता है कि- "स्त्री हि ब्रह्मा विभूविथ " उचित आचरण, ज्ञान से नारी तुम निश्चय ही ब्रह्मा की पदवी पाने योग्य हो सकती हो।

वर्तमान भारतीय परिवेश में महिलाओं का जीवन

भारतीय सभ्यता और संस्कृति में मातृ शक्ति अर्थात् महिला वर्ग का स्थान सदैव सर्वोपरि माना गया है। इस देवभूमि में समस्त आराधना पद्धतियों में नारी शक्ति का पूजन किया जाता है। नारी के बगैर पुरुष के द्वारा की गई ईश आराधना अधूरी ही होती है। सृष्टि के दो अनिवार्य व पूरक अंग के रूप में महिला व पुरुष ही हैं। इस शाश्वत सत्य को कौन नकार सकता है। क्या कोई स्त्री को सहअस्तित्व के पुरुष-है सकता नकार अधिकारों की बात करें तो भारतीय सभ्यता मूल्य पारिवारिक व संस्कृति-प्रत्येक के समाज वरन् नही ही परिवार तो नारी या हो नर वो चाहे व्यक्तिबालक हो या वृद्ध सभी के संरक्षण व अधिकारों की बेमिसाल धरोहर है। भारतीय समाज सदैव सहिष्णु व मानवता वादी सोच का रहा है। मुगलों तथा ब्रितानिया हुकूमत की गुलामी से मुक्ति की लड़ाई में महिला शक्ति किसी भी नजरिए से पुरुषों से पीछे नहीं रही हैं। वास्तविकता तो यह है कि वीर पुरुषों की जननी मातृशक्ति ही वीरोचित कर्म व धर्म की प्रेरक रही हैं।

अतीत की गौरवशाली-बलिदानीत्याग मयी गाथायें समेटे भारत पारिवारिक आज में भूमि-है। जिस चुका तोड़ दम विश्वास आपसी व मूल्य को वृक्ष फलदायक भले अच्छे दीमक प्रकार व पूंजीवादी प्रकार उसी है देता कर नष्ट भौतिकतावादी विचारधारा भारतीय जीवन पद्धति व सोच को नष्ट करने में प्रति पल जुटा है। जिस प्रकार एक शिक्षित पुरुष स्वयं शिक्षित होता है लेकिन एक शिक्षित महिला पूरे परिवार को शिक्षित व सांस्कारिक करती है उसी प्रकार ठीक इसके उलट यह भी है कि एक दिग्भ्रमितभ्रष्ट व चरित्रहीन पुरुष अपने आचरण से स्वयं का अत्यधिक नुकसान करता है परिवार व समाज पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है लेकिन अगर कोई महिला दिग्भ्रमितभ्रष्ट व चरित्रहीन हो जाये तो वह स्वयं के अहित के साथ के परिवार अपने साथ-प्रभाव प्रतिकूल भी पर परिवार के दूसरे ही साथ डालती है। एक कटु सत्य यह भी है कि एक पथभ्रष्ट पुरुष के परिवार को उस परिवार की महिला तो संभाल सकती है अपनी संतानों को हर दुःख सहन करके जीविकोपार्जन लायक बना सकती है लेकिन एक पथभ्रष्ट महिला को संभालना किसी के वश में नहीं होता है और उस महिला के परिवार व संतानों को अगर कोई महिला का सहारा व ममत्व न मिले तो उस परिवार के अवनति व अधोपतन को रोकना नामुमकिन है।

उपसंहार

नारी सशक्तीकरण और प्रगतिशील समाज में उनकी अहम् भूमिका है भारतीय समाज में आधुनिक स्त्रियों के अस्तित्व और उसकी अस्मिता के प्रश्न को लेकर आज की युवा पीढ़ी काफी जागरूक हुई है। समाज में स्त्री शोषण के विरुद्ध देश के आम जन की आवाज स्त्री की आवाज के साथ जुड़ चुकी है। वर्तमान समय में बदलते यथार्थ ने स्त्री के अंतःकरण को भी बदल डाला है। भ्रष्टाचार के विरुद्ध हुए आन्दोलन ने जहाँ आम आदमी के सोए हुए विवेक को जगाकर उसे किसी भी अन्याय के विरुद्ध एकजुट होना सिखाता तो निर्भया आन्दोलन ने इसे और हवा दी।... सारे टीवी चैनलसारे छात्रदेश के सारे युवा स्त्री के पक्ष में खड़े हो गए। स्त्री-शोषण के विरुद्ध उठी जनसमूह की आवाज समाज में नारी की स्थिति में सुधार और उसकी उन्नति का सूचक है। आज नारी समाज में अपने सभी अधिकारों के साथ अपना जीवन यापन करने के साथ समाज का एक बहुत ही अहम् भाग बन चुकी है

संदर्भ ग्रंथ सूची

- [1] हंस जनवरी, 2002, पृष्ठ सं- 83
- [2] रमणिका गुप्तास्त्री--विमर्श कलम :
.सं-पृष्ठ बहाने के कुदाल और 55
- [3] जगदीश्वर चतुर्वेदी साहित्य स्त्रीवादी-
विमर्श, पृष्ठ-204,

- [4] उमा शुक्ल की अस्मिता नारी भारतीय-
पहचान, पृष्ठ -14
- [5] वर्मा-पृष्ठ -कड़ियाँ की शृंखला -92
- [6] उमा शुक्ल की अस्मिता नारी भारतीय-
पहचान, पृष्ठ-15
- [7] वीरभारत तलवार नवजागरण राष्ट्रीय-
साहित्य और, पृष्ठ-124
- [8] http://chhattisgarhvivek.blogspot.in/2011/12/blog-post_8143.html
- [9] डॉ अस्मिता-स्त्री-अली जाफ़र फ़िरोज.
चुनौतियाँ नई और प्रश्न नये :संघर्ष का
2011
- [10] जगदीश्वर चतुर्वेदी साहित्य स्त्रीवादी-
-पृष्ठ -विमर्श7
- [11] डॉ अस्मिता-स्त्री-अली जाफ़र फ़िरोज.
नई और प्रश्न नये: संघर्ष का
-चुनौतियाँ 2011
- [12] हंस जनवरी-2002, पृष्ठ-82-83